प्रिय सहयोगी शिक्षकगण, गैर शिक्षकगण साथियों, छात्र एवं छात्राओं

आज हम अपने देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाने के लिए यहां इकठ्ठा हुए हैं। अपने देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व के उपलक्ष्य पर मैं आप सब का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ।

आज मुझे आप सबकी तरफ से अपनी संस्था में अपने देश का राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अवसर मिला है.

मैं अपनी गौरवशाली संस्था की ओर से देश को आज़ादी दिलाने वाले हर वीर सेनानी के बेशक़ीमती बलिदान को ह्रद्य्सात कर के राष्ट्रीय ध्वज को प्रणाम करता हूँ।

हमें 14 अगस्त 1947 की उस महत्वपूर्ण रात को कभी नहीं भूलना चाहिए जब पंडित जवाहर लाल नेहरू नई दिल्ली शहर में अपना पहला भाषण देने के लिए खड़े हुए थे। उनके द्वारा कहे गये शब्द इतने उत्साहित थे कि वे आज भी हम पर अपने प्रभाव डालते है - "जब दुनिया सो रही है, तो भारत जीवन और स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ रहा है"। इन अनेक प्रयासो और बलिदानों के बाद भारत गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुआ और एक स्वतंत्र राष्ट्र के रुप में स्थापित हुआ,

जिसके बाद से इसे दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के रुप माना जाने लगा।

यह स्वतंत्रता हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा कड़ी मेहनत के पश्चात हासिल हुई है। इस आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानियों ने न केवल अपना खून बहाया था, बल्कि इसके लिये उन्होंने अपने परिवार का भी त्याग कर दिया था। यह सभी स्वतंत्रता सेनानी शानदार व्यक्तित्व के धनी थे जो दृढ़ता, धीरज, धैर्य, साहस तथा अपने महान कार्यों के लिए जाने जाते हैं। अपनी बुद्धिमता और दृढ़ विश्वास के आधार पर उन्होंने स्वतंत्रता के लिए एक लम्बे कठिनाई भरे समय अवधि तक संघर्ष किया। उन्होंने अंग्रेजों के हाथों अपमान, शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न का सामना किया, लेकिन फिर भी उन्होंने इसके बारे में कभी कोई चर्चा नहीं की और ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करना जारी रखा।

यह दिन हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों की याद में श्रद्धांजलि अर्पित करने के रुप में मनाया जाता है। जिन्होंने हमारे भारत देश को गुलामी के बंधन से मुक्त कराने के लिए तथा इसे बढ़ते और समृद्ध देखने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू जिन्होंने भारत को एक औद्योगिक राष्ट्र बनाने की दिशा में अपना विशेष योगदान दिया, पूरे विश्व में प्रसिद्ध महात्मा गांधीजी जिन्होंने

हमें अहिंसा का मार्ग दिखाया और सुभाष चंद्र बोस जिन्होंने हमारे अंदर साहस और आत्मविश्वास पैदा किया। इसके अलावा स्वामी विवेकानंद जो एक महान आध्यात्मिक गुरु थे, उन्होंने हमें आध्यात्म का मार्ग दिखलाया।

आज ही के दिन हमारे देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों ने वर्षों तक संघर्ष करने के बाद स्वतंत्रता हासिल करने तथा हमारे देश को अंग्रेजों के गुलामी से आजादी दिलाने में सफलता प्राप्त की।

भारतीय रूप में हमारी पहचान "विविधता में एकता" यानी विविध संस्कृति, धर्म और भाषा की भूमि के प्रतीक के रुप में दर्शायी जाती है। भारत में लगभग 325 भाषाएं बोली जाती हैं जिनमें से 18 आधिकारिक भाषाएं हैं। हम विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ यहां मिल जुल कर रहते हैं और सभी प्रकार के त्योहारों को उत्साह के साथ मनाते हैं। असल में, हमारे देश में सभी धार्मिक, जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया जाता है और इसलिए यहां अतीथी को देवताओं के समान सम्मानित किया जाता है और उन्हें “अतीथी देव भवः” द्वारा सम्बोधित किया जाता है। एक बार सांस्कृतिक वार्ता में शामिल होने के दौरान, हम अपनी खुद की भारतीय परंपरा और मूल्यों को कभी नहीं भूलते और उन्हें बरकरार रखते हैं। पिछले 74 वर्षों में, हमारा

देश दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में से एक के रूप में उभरा है और अब तक, हम एक राष्ट्र के रूप में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, दूरसंचार उद्योग के साथ हरित क्रांति जैसे क्षेत्रो में खुद को साबित कर चुके हैं और वर्तमान में, हम एक मजबूत आईटी हब बनने की दिशा की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

हमारे देश के सुधार के लिए हमारे कंधों पर अनेक जिम्मेदारियां हैं और हमें इन जिम्मेदारियों को जल्द से जल्द पुरा करने का आवश्यक्ता है क्योंकि हम अभी भी एक प्रगतिशील देशों की श्रेणी में गिने जाते हैं न की विकसित देशों के रुप में। हालांकि अभी हमारे पास तय करने के लिए एक लंबा रास्ता है। हमें भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हमारे पूर्वजों के सपनों और बलिदानों को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। हमें हमारे देश से भ्रष्टाचार और सभी सामाजिक बुराइयों को मुक्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। आइए हम अपनी मातृभूमि के लिए एक ऐसी व्यव्स्था का निर्माण करने का संकल्प लें, जिसमें सभी बराबर हो, किसी भी प्रकार का भेदभाव ना हो। जहां हमारे देश की प्रत्येक महिलाएं स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सकें तथा प्रत्येक बच्चे को बुनियादी शिक्षा अवश्य प्राप्त हो सके।

आइए हम सभी मिलकर एक बेहतर कल का निर्माण करें।

इसी क्रम में हमारे पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने बच्चों को संबोधित किया था और अपने सम्बोधन भाषण में उन्हें बड़े सपने देखने और भारत को दृढ़ता के साथ एक महान और सशक्त राष्ट्र बनाने का आग्रह किया था। उनके ये शब्द केवल शब्द नहीं थे, बल्कि ये भावनाएं थी, जिन्होने लाखों लोगों के दिलों को जोड़ने और उन्हें प्रोत्साहित करने का कार्य किया था।

अंत में, मैं यह कहकर अपने भाषण को समाप्त करता हूं कि हमें अपने देश के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए कोई बहुत बड़े कदम उठाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसके लिए हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा भी, जैसे कि भारतीय उत्पादों को अपना समर्थन देकर भी अपना बड़ा योगदान दे सकते हैं। जिससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था बेहतर हो सके और गरीब बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। हम इस प्रकार की अनेक गतिविधियों के माध्यन से अपने देश को प्रगति के मार्ग पर ले जा सकते हैं और इसे वैश्विक क्षेत्र में एक महाशक्ति के रुप में स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका अदा सकते हैं।